Volume - I (No.-4)
Publication ,August
(First Fortnight) 2024

SARAI

STATE FOREST TRAINING INSTITUTE, MAHILONG, RANCHI

INDEX

Sl. No.	Subject	Page No.
1.	Our Endeavours	1-5
2.	मिज़ाज ए मौसम नहीं" मानव बदला है। - अजित दुबे..	6
3.	प्रशिक्षणोंपरांत यात्रा वृतांत- नित्यानंद तिवारी (वनरक्षी)	7-9

Preface

We are delighted to present next issue of “SARAI”. Again this issue has photographs of our daily endeavours to keep our campus clean and beautiful.

We request the readers to send their creativity to be published with photographs and write up to make it more successful.

Suggestions are always welcome.

Thank you ! Johar !

Dr. Vijay Shankar Dubey
DCF, Training, Ranchi

STATE FOREST TRAINING INSTITUTE, MAHILONG,RANCHI

1. Our Endeavours

At the office

Gate Keeping

Mowing grass near boys' hostel

Cleaning of tennis court construction area

<ins>Our Endeavours</ins>

Weeding hoeing

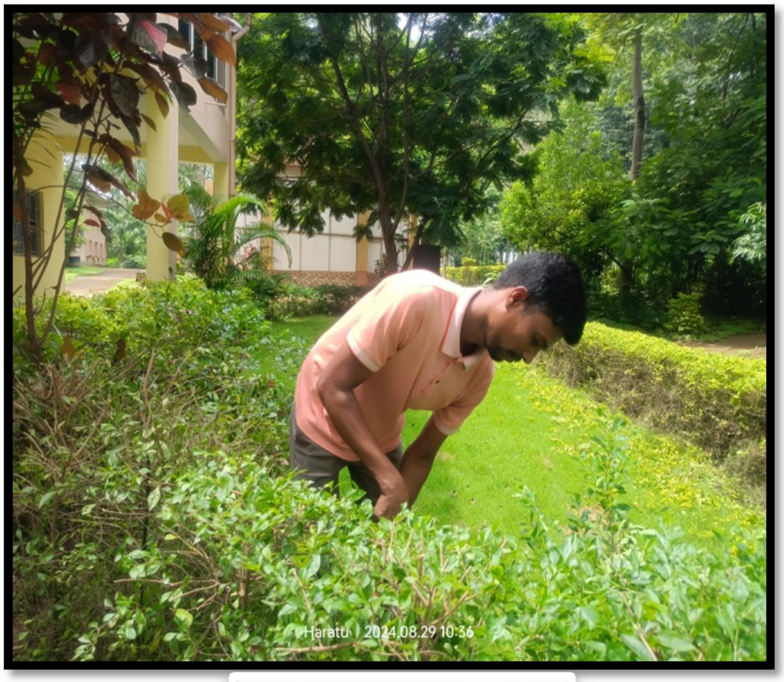

Pruning the hedge

Weeding hoeing near director residence construction building

Weeding hoeing near boys' hostel

Our Endeavours

Sweeping

Arranging of stones

Weeding

Sweeping near Girls' hostel

Our Endeavours

Bringing soil to level the track

Cleaning bushes

weeding

Mopping in the mess

Our Endeavours

Flowers plantation

Planting flowers in a pot

Clearing bushes

Clearing bushes

2. मिज़ाज ए मौसम नहीं" मानव बदला है।

जब प्रकृति का प्रहार हो,
नियति पे रोष जताते हैं,
आये बाढ़-सुखाड़, वज्र-तूफ़ान,
तब देव पर दोष लगाते हैं।
गंगा है हद में, युमना भी अपने कद में,
है तो इंसान अनहद में,
लोलुप-लिप्सा के जद में,
चूर भुजबल के मद में।।

नित् नए बहानें से,
जाने से-अंजाने से,
बहाता नदियों में मलिन नाला,
काटता वृक्ष, देता स्वार्थ का हवाला।
कटाव रेत-मिट्टी का जारी है,
आज डूबा है सिर्फ़ उत्तर-दक्षिण,
कल विपत्ति विश्व पर भारी है।।

मिज़ाज ए मौसम नहीं, मानव बदला है,
बनाया पहाड़ों को घर,
काटा जंगल बसाया शहर,
किया खाली "भू" खज़ाना,
हुई सरिताएं कूड़ाखाना।
इन कृत्यों से पृथ्वी का दिल दहला है.
तभी निरंतर विपदा का सिलसिला है,
यहां सूखा तो वहां ज़लज़ला है।।

- अजित दुबे..

3. प्रशिक्षणोंपरांत यात्रा वृतांत

प्रशिक्षण का अंतिम मास बीत रहा था। उसी समय हमारे DCF, डॉ॰ विजय शंकर दुबे सर के द्वारा निर्देशित किया जाता है कि सभी प्रशिक्षणार्थी साहेबगंज जायेंगे। मन में एक कोतूहल सा उत्पन्न हुआ कि हमलोग को जाना था काजीरंगा तो एकाएक पुरा दिशा ही बदल गया। लेकिन कहा गया है कि जो होता है अच्छा होता है नियति के आगे पत्ता भी नहीं हिल सकता तो हम तुच्छ मानव की क्या मजाल। रात बीत गई कि सफर कैसा होगा कैसे इतना दूर जायेंगे। सुबह हो गई दो बसों के सफर में 73 प्रशिक्षणार्थी और 4 सहयोगी के साथ हमलोग सेल्फी और गाना का आनंद लेते हुए निकल गए। बस खुलने के बाद हमलोग सफर में खाते पीते चले जा रहे है सफर खत्म होने का नाम ले ही नहीं रहा। साहेबगंज ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे हमलोग सिडनी जा रहे हों। सिडनी की ऊची ऊंची इमारतों और सुदरता का स्वप्न देख ही रहा था कि रात्रि भोजन के लिए बस दुमका वन भवन में रुक जाती हैं। जहाँ हमलोगों के भोजन की व्यवस्था की गई थी। रात्रि भोजन के उपरांत हम सभी पुनः साहेबगंज के लिए निकल गए। रात्रि 1 बजे दोनों बस अपने अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच गई। एक बस फॉसिल पार्क और दूसरी बस उधवा पक्षी आश्रयणी में रुकी।

कहा जाता है जब पृथ्वी के वाह्य रूप का निर्माण हो रहा था उससे पहले पूरी पृथ्वी जलमग्न थी। जल से बाहर जो सबसे पहले स्थल का निर्माण हुआ वह राजमहल क्षेत्र ही है। इसी लिए इसे जीवाश्मों का क्षेत्र भी कहते है और यहा की विविधता दर्शनीय है। फॉसिल पार्क में 15 करोड़ से 2 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म देखने को मिला। जिसे देखकर हम सभी आश्चर्यचकित हो गए। फॉसिल पार्क के नजदीक ही वन विभाग की सहायता से ताड़ के पेड़ से निकाले गए रस से गुड़ बनाया जा रहा था। हमलोग आज तक सिर्फ यही जान रहे थे की गन्ना से गुड़ बनाता है लेकिन यह एक अलग अनुभव प्राप्त हुआ। दोपहर में भोजन करते समय एक और अलग अनुभव हुआ वहां के आलू का भुजिया जो मिला वो इतना स्वादिष्ट और अलग प्रकार का था, जो हमारे क्षेत्र में वैसा नहीं बनता है। भोजन करने के बाद सभी लोग थोड़ी देर विश्राम किए उसके बाद चले गए फॉसिल पार्क के सिनेमा हॉल में जहां फॉसिल से संबंधित सारी जानकारी दी गई। उसके बाद हमलोग को कांतारा सिनेमा दिखाया गया। जिसमें वन, वन विभाग और वन देवता के महत्व के बारे में बताया गया है।

दूसरे दिन हमलोग चले गए रेशम कीट प्रसंस्करण केंद्र जहां रेशम कीट प्रबंधन और उपयोगिता के बारे में बताया गया। और उसके बाद हमलोग गंगा नदी के किनारे नदी तट रोपण को देखने गए की बड़ी नदियों के किनारे किस प्रकार वृक्ष को लगाया जाता है। उसके बाद सभी बंधु जिसको स्वक्ष निर्मल, पतित पावनी गंगा में करने का मन किया सभी लोग डुबकी लगाए ;साहेबगंज की गंगा की जल देखने में इतना साफ प्रतीत हो रहा था की कोई स्नान अपने आप को रोक ही नहीं सकता है। उसके बाद हम सभी मोती झरना देखने चले गए। मोती झरना एक सपाट बट्टान से गिरती है जिसकी ऊचाई 46 मीटर है। यही से गुमानी नदी निकलती है जो फरक्का के पास गंगा नदी में मिल जाती हैं। झरना के पास ही बाबा भोलेनाथ का मंदिर है, जिसका दर्शन करने के पश्चात हम सभी फिर से अपने यथा स्थान फॉसिल पार्क के लिए प्रस्थान कर गए।

तीसरे दिन हम सभी दर्शन करने के लिए बाबा गजेश्वर धाम गए जिसे लोग शिवगादी धाम भी कहते हैं। पौराणिक मान्यता है कि महिषासुर का पुत्र गजासुर के द्वारा इसी गुफा में भगवान आशुतोष को प्रसन्न करके वर प्राप्त किया था। बाबा गजेश्वर नाथ का मंदिर पहाड़ी पर गुफा में अवस्थित है जहां जाने के लिए 195 सीढ़ियों की चढ़ाई करनी पड़ती हैं। गुफा में अवस्थित बाबा के प्राकृतिक पीताम्बरी शिवलिंग पर ऊपरी चट्टानों से अनवरत जल टपकते रहते हैं। जो अद्भुत एवं अनुपम है। बाबा के दर्शन करने के पश्चात हम सभी चले गए गंगा डॉल्फिन देखने के लिए। एक ही नाव पर सवार हम सभी गंगा की बीच धारा में पहुंचने पर बात कर ही रहे थे कि अटखेलिया खेलती हुई। डॉल्फिन इधर से उधर उमड़ने घुमड़ने लगी। गंगा की साफ निर्मल जल में डॉल्फिन को देखने के बाद एक सुखद अहसास हुआ। देखने के बाद छूने का मन किया लेकिन उनकी चंचलता चपलता के आगे एक न चली और दूर से ही नयनाभीराम कर आगे बढ़ते चले गए।

वहां से निकलने के बाद हम सभी सिंघी दलान गए जो एक ऐतिहासिक धरोहर है। जिसके नजदीक ही तेलियागढ़ का किला अवस्थित है जिसे बंगाल का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। गंगा किनारे अवस्थित सिंघी दलान के अदर ही सपाट महाराजाधिराज विक्रमादित्य की प्रतिमा स्थापित है जिसे देखकर ऐतिहासिक महत्व के बारे में जानकारी मिली। सभी लोग फोटो और सेल्फी लिए और वहां के सुखद सफर का अंत हुआ और हम सभी अपने यथा स्थान फॉसिल पार्क चले गाए।

अब सफर अंतिम पड़ाव पर आ चली थी। झारखंड के बहुप्रतीक्षित रामसर साइट उधवा पक्षी आश्रयणी देखने के लिए गए जो की जीपतौडा झील में अवस्थित है। चार नाव की सवारी में हम सभी झील में पक्षियों को देखने के लिए निकल गए। पक्षियों के कलरव और रंगबिरंगा नजारा देखकर मन प्रसन्न हो गया। उधवा पक्षी आश्रयणी में देशी एवं विदेशी पक्षियों का बसेरा है। इसमें स्पूनबिल, किंगफिशर, बेकटेल, ग्रेट आऊल, स्ट्रोक जैसे प्रवासी पक्षी हैं। इसके अलावा झील में गरुड़, सारस, पनकौवा, डेबकिच, बानकर पक्षी देखने को मिला तथा झील के किनारे टिटहरी, बटान, खंजन, बगुला देखने को मिला। इसके अलावे आश्रयणी क्षेत्र में कबूतर, बगेरी, गौरैया, बुलबुल, नीलकंठ देखने को मिला। सायं काल के समय झील में नौका विहार करते हुए सूर्य की छटा और पक्षियों का कलरव चार चांद लगा रही थी। ऐसा देखने से लग रहा था जैसे जिंदगी की असली सुख तो ये पक्षी भोग रहे हैं। हम तो सिर्फ दर्शक बन बैठे हैं। उनकी ये गूंज आजीवन हमारे कर्णछिद्र में गुंजायमान रहेगी। उधवा आश्रयणी के बाद हम सभी संथाल विद्रोह के जन नायक सिधू . कान्हु, चांद - भैरव और बहन फूलो झानो के जन्मस्थली भोगनाडीह के लिए प्रस्थान किए। बरहेट में जिस बरगद के पेड़ में सिधु कान्हु को फासी दिया गया था वहां गए। जाने के बाद यह आभास हुआ कि कितनी पह पवन भूमि है जहा से स्वतंत्रता की बीज रोपित की गई अपनी जान की आहूति देकर कैसे वो महान लोग थे और कितनी अच्छी उनकी सोच थी। तब समझ आया कि कोई जन्म से या ऊंचा कुल से महान नहीं होता है लोग अपने सोच और कर्तव्य से महान होते हैं। उसके बाद भोगनाडीह गए। जहां एक पार्क बनाया गया है जिसमे सभी भाई बहन की प्रतिमा बनी हुई है। प्रतिमा से निकलती हुई तेज यह बता रही थी कि किस प्रकार अंग्रेजों को चने चबाने पड़े होंगे। प्रतिमा के यादों को समेटने के लिए हम सभी फोटो लिए और पुन बस में सवार होकर रात्रि में ही FTS महिलौंग के लिए निकल गए। और सुबह 10 बजे के आस पास पहुंच गए।

मैं एक बार पुन DCF, डॉ॰ विजय शंकर दुबे सर को धन्यवाद करूंगा। क्योंकि उनके मार्गदर्शन में ही इतना सुखद और यादगार दर्शनीय स्थल पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

नित्यानंद तिवारी (वनरक्षी)
उत्तरी वन प्रमंडल, गढ़वा ।

--------------------XX----------------------

arch 2023 06:22

SULTAN

arch 2023 07:09

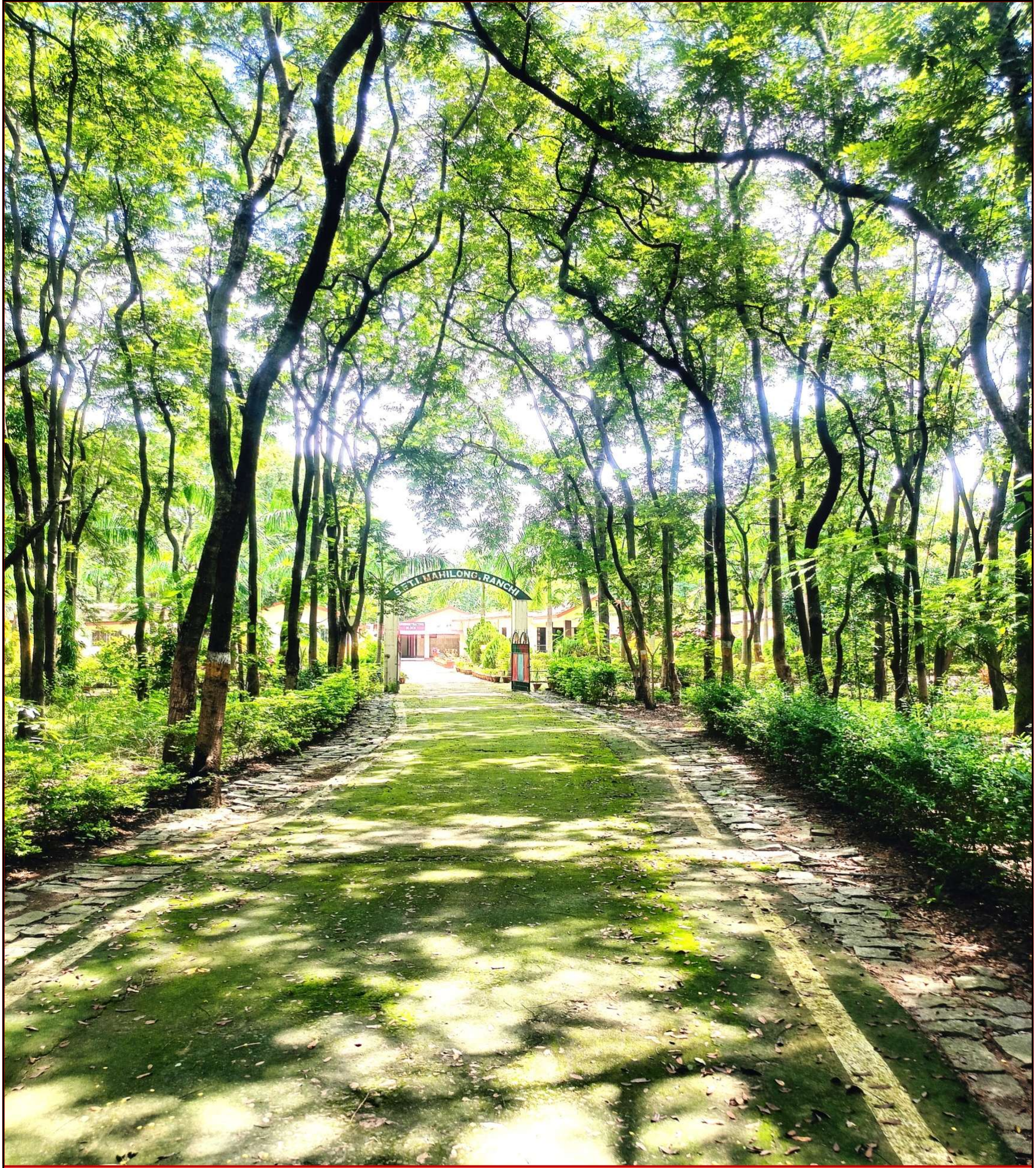

प्रकाशक

राज्य वन प्रशिक्षण संस्थान महिलौंग, राँची।

E-mail: ftsmahilong@gmail.com | Website: www.forest.jharkhand.gov.in